राजस्ट्री सं. डी. (डी.एन.)-127

REGISTERED NO. D. (D.N.) 127

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

PART I—Section 1
भाग I—खण्ड 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 15] नई दिल्ली, बुधवार, जनवरी 20, 1988/पौष 30, 1909
No. 15] NEW DELHI, WEDNESDAY, JANUARY 20, 1988/PAUSA 30, 1909

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

केन्द्रीय सचिवालय ग्रन्थागार
CENTRAL SECRETARIAT LIBRARY
18.2.88
GOVT. OF INDIA

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली, 20 जनवरी, 1988

अधिसूचना

निधन सूचना

संख्या 3/2/88-पब्लिक :—भारत सरकार और भारत की जनता अपने स्वतन्त्रता आन्दोलन की ऐतिहासिक विभूति खान अब्दुल गफ्फ़ार ख़ान के पेशावर में देहान्त हो जाने पर गहरा शोक प्रकट करती है।

ख़ान अब्दुल गफ्फ़ार ख़ान का जन्म विभाजनपूर्व भारत के तत्कालीन नार्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्रोविन्स के पेशावर जिले में उत्तमन्जाई में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा एक परम्परागत मुस्लिम विद्यालय में प्राप्त की; तत्पश्चात् औपचारिक शिक्षा लेने के लिए वे पेशावर के मिशन हाई स्कूल में दाखिल हुए जहां वे अपने प्रधानाचार्य की मिशनरी भावना से अत्यधिक प्रभावित हुए। बाद में वे अलीगढ़ आए जहां उन्हें मौलाना अब्बुल कलाम आज़ाद द्वारा सम्पादित "जमींदार" और एक उर्दू साप्ताहिक "अल हिलाल" जैसे उर्दू के समाचार पत्रों को पढ़ने का अवसर मिला। इस अनुभव से उनमें राजनीति के प्रति रुचि जागृत हुई जिसमें बाद में उन्होंने स्वयं को पूर्णतया समर्पित कर दिया। शीघ्र ही वे महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अब्बुल कलाम आज़ाद, सरोजिनी नायडू और सरदार वल्लभ भाई पटेल सरीखे निष्ठावान एवं साहसी व्यक्तियों के साथ राष्ट्रीय नेतृत्व का एक अंग बन गए। उनके गांधी जी के साथ घनिष्ठ संबंध हो गए और वे अहिंसा, स्वराज और गरीबों की सेवा की धारणा के प्रति पूर्णतया समर्पित होकर काम करने लगे। उन्होंने महात्मा के संदेश को नार्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्रोविन्स के बहादुर लोगों तक पहुंचाया जिससे वे फ्रंटियर गांधी के नाम से जाने जाने लगे।

ख़ान अब्दुल गफ्फ़ार ख़ान का राजनीतिक जीवन 1919 में रौलट विधेयक विरोधी आन्दोलन में भाग लेने से प्रारम्भ हुआ। सन् 1920 में उन्होंने नागपुर के कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया और खिलाफत आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई। सन् 1931 में बादशाह ख़ान ने सिविल अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और जेल गए। यह वह समय था जबकि उन्होंने अपने हिन्दू, सिख और ईसाई मित्रों के साथ पंजाब की जेलों में रहते हुए घनिष्ठ संबंध स्थापित किए जो आजीवन चलते रहे।

सन् 1931 में गांधी-इर्विन समझौते के अंतर्गत और फलस्वरूप जेल से रिहा होने पर, बादशाह ख़ान ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 45वें अधिवेशन में भाग लिया। उनके

बलिदान और उनके सच्चे नेतृत्व को स्वीकारते हुए सन् 1934 में उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाने की पेशकश की गई। बादशाह खान ने इस गरिमामय पद को यह कह कर लेने से इन्कार किया कि "मैं जन्म से एक सिपाही हूं और आजीवन मैं यही बना रहना चाहता हूं।" अपने शब्दों के अनुरूप बादशाह खान ने राष्ट्र के लिए लगातार संघर्ष किया और वे ठीक 1947 तक कांग्रेस के सभी आन्दोलनों में सक्रियता से भाग लेते रहे। इस अवधि के दौरान उन्होंने लगभग 14 वर्ष जेल में बिताए।

खान अब्दुल गफ्फार खान ने भारत-ब्रिटिश बातचीत के दौरान भारत के विभाजन का कड़ा विरोध किया था और जब विभाजन हो ही गया तब भी उन्होंने विश्राम नहीं किया और उन्होंने पख्तूनों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए एक और संघर्ष जारी किया जिनके लिए वे समस्त जीवन चिन्ताग्रस्त रहे। एक उत्साही समाज सुधारक बादशाह खान ने उनकी प्रगति के लिए कई योजनाओं को क्रियान्वित किया। उन्होंने "खुदाई खिदमतगार" (सर्वेंट्स आफ गॉड) नामक एक संस्था की आधारशिला रखी जिसका उद्देश्य गरीब और दलित वर्गों को सामाजिक और आर्थिक न्याय दिलाना था। सन् 1921 में उन्होंने उत्तमन्शाई में एक राष्ट्रीय स्कूल खोला और सन् 1928 में पुश्तो भाषा में "पख्तून" नाम से एक मासिक पत्रिका शुरू की। उनके द्वारा किए गए महान बलिदानों के कारण लोग उन्हें "फ़खरे अफगान" (दि प्राईड आफ दि पीपल) और बादशाह खान से सम्बोधित करते थे।

बादशाह खान को अपनी सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा के कारण कई बार जेल भेजा गया। सन् 1964 में अपनी रिहाई के पश्चात् स्वगृहीत देश निर्वासन के कारण वे अफगानिस्तान में रहे और 1972 के अन्त में पाकिस्तान लौटे। उनके मन में भारत और भारत के लोगों के प्रति निरन्तर अपार स्नेह बना रहा। भारतीय जनता भी स्वतन्त्रता के संघर्ष में उनके द्वारा किए गए असाधारण बलिदानों के कारण उन्हें अपना अपार स्नेह एवं आदर देती थी। उनके प्रति आदर और स्नेह से किए गए कृत्यों में उन्हें अन्तरराष्ट्रीय सद्भाव के लिए 1969 में नेहरू पुरस्कार और 1987 में भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

खान अब्दुल गफ्फार खान किसी आयु, देश, जाति या धर्म विशेष से बंधे हुए नहीं थे। वे मनुष्य की अदम्य भावना के मूर्त रूप थे जो मनुष्य जाति के सम्मान और कल्याण के लिए अथक संघर्ष करते रहे। श्रीमती इंदिरा गांधी के शब्दों में "मानव जाति का इतिहास मानव बलिदान का इतिहास है। प्रायः शताब्दियां ही गुजर जाती हैं और मनुष्य की भावना दबी या छुपी रहती है। तभी अचानक एक महापुरुष प्रकट होता है जो मनुष्य की उस दबी हुई भावना को वाणी देता है। गांधी जी ऐसे ही व्यक्ति थे। बादशाह इस प्रकार के दूसरे व्यक्ति हैं।"

सी. जी. सोमैया, सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi, the 20th January, 1988

NOTIFICATION

OBITUARY

No. 3.2 88-Public.—The Government and people of India place on record their deep sorrow at the passing away of Khan Abdul Ghaffar Khan, the legendary figure of our Independence Movement at Peshawar.

Khan Abdul Ghaffar Khan was born in 1890 in Uttamanzai in Peshawar District of the erstwhile North-West Frontier Province of pre-partition India. He received his early education in a traditional Muslim School; thereafter, for his formal education he joined a Mission High School at Peshawar where he was greatly influenced by the missionary spirit of his Principal. Later, he came to Aligarh where he had occasion to study Urdu papers like 'Zamindar' and 'Al Hilal', an Urdu Weekly edited by Maulana Abul Kalam Azad. This experience awakened an interest in politics which later absorbed him entirely. Soon he became a part of the vanguard of national leadership along with stalwarts like Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru, Maulana Abul Kalam Azad, Sarojini Naidu and Sardar Vallabhbhai Patel. He developed a close relationship with Gandhiji and became totally committed to the concept of non-violence, Swaraj and service to the poor. He carried the Mahatma's message to the valiant people of North-West Frontier Province and came to be known as Frontier Gandhi.

Khan Abdul Ghaffar Khan's political career began with his participation in the agitation against the Rowlatt Bill in 1919. In 1920, he attended the Nagpur Session of the Congress and also took a leading part in the Khilafat agitation. In 1931, Badshah Khan joined the Civil Disobedience Movement and was jailed. It was during this period that he established life-long contacts with his Hindu, Sikh and Christian friends who shared his incarceration in the Punjab jails.

In the wake of the Gandhi-Irwin Pact in 1931 and his consequent release from jail, Badshah Khan attended the 45th Session of the Indian National Congress. In 1934 as a mark of recognition of his

sacrifice and true leadership, the Congress offered him Presidentship. Badshah Khan declined the honour with the words "I am a born soldier and I shall die as one." True to his words, Badshah Khan continued to fight for the nation, actively participating in all Congress Movements right upto 1947. During this period, he spent about 14 years in jail.

Khan Abdul Ghaffar Khan during the Indo-British negotiations had vehemently opposed the partition of India and when the partition did come about, he did not rest but embarked upon another mission, that of upliftment of the Pakhtoons for whom he had all his life nurtured a deep concern. A zealous reformer, Badshah Khan implemented many ideas for their upliftment. He founded an organisation known as 'Khudai Khidmatgars' (Servants of God) a movement aimed at securing social and economic justice for the poor and downtrodden, the National School at Uttamanzai in 1921, and in 1928 he began a monthly journal in Pushto named the 'Pakhtoon'. For the great sacrifices that he made, his people called him 'Fakhr-e-Afghan' (The Pride of the People) and Badshah Khan.

Badshah Khan was imprisoned a number of times for his social and political ideology. After his release in 1964, he lived in self-imposed exile in Afghanistan until his return to Pakistan at the end of 1972. He continued to nurture great affection for India and its people, and the Indian people in turn bestowed their affection and deep respect on him for the extraordinary sacrifices made by him during their struggle for freedom. Amongst the many gestures of respect and affection bestowed upon him was the Nehru Award for International Understanding which was presented to him in 1969 and the Bharat Ratna which was awarded in 1987.

Khan Abdul Ghaffar Khan was not confined to any particular age, nation, caste or creed. He was the embodiment of the indomitable spirit of man, relentlessly crusading towards the dignity and well-being of mankind. In the words of Smt. Indira Gandhi "the history of the human race is the history of the martyrdom of man. Centuries often pass by during which the human spirit lies stifled and dormant. Then, suddenly, a man arises giving voice to the muted turbulence of the human spirit. Gandhiji was such a man. Badshah Khan is another."

C. G. SOMIAH, Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, RING ROAD, NEW DELHI-110064
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI-110054, 1988